

**The Compulsory Physical Fitness of Children through Sports in Schools and  
Development of Sports Infrastructure Bill, 2014**

SHRI VIVEK GUPTA (West Bengal): Sir, I move for leave to introduce a Bill to promote sports education and physical fitness for an all-round development of children in the country and to develop international standard sports infrastructure in the country, by making sports a compulsory regular subject in schools and providing equal opportunity and incentives to sportspersons across the country and for all matters connected therewith or incidental thereto.

*The question was put and the motion was adopted.*

SHRI VIVEK GUPTA: Sir, I introduce the Bill.

**The Criminal Laws (Amendment) Bill, 2014**

SHRIMATI KANIMOZHI (Tamil Nadu): Sir, I move for leave to introduce a Bill further to amend the Indian Penal Code, 1860 and the Code of Criminal Procedure, 1973.

*The question was put and the motion was adopted.*

SHRIMATI KANIMOZHI: Sir, I introduce the Bill.

**The Compulsory Military Training Bill, 2012 — Contd.**

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Now, we take up further consideration of the motion moved by Shri Avinash Rai Khanna on the 8th August, 2014, that the Bill to provide for compulsory military training to all youths in the country and to include military training in the curriculum for children from matriculation to graduation level and for matters connected therewith.

Dr. Satyanarayan Jatiya to continue his speech. But, he is not present. Then, Shri Husain Dalwai, not present. Then, Shri Narendra Budania, not present. Then, Shri V.P. Singh Badnore, not present. Then, I call the next name from BJP, Shri Nand Kumar Sai, not present. Then, Shri Mansukh L. Mandaviya.

**श्री मनसुख एल. मांडविया** (गुजरात): सर, माननीय अविनाश राय खन्ना जी compulsory military training का जो प्रस्ताव लेकर आए हैं, मैं उसका समर्थन करने के लिए खड़ा हुआ हूँ। मिलिट्री ट्रेनिंग का purpose केवल इतना नहीं है कि ट्रेनिंग लेने के बाद बच्चे का शरीर अच्छा हो जाएगा, वह अच्छी तरह से बंदूक पकड़ सकेगा। मैं एनसीसी का कैडेट रहा हूँ। मिलिट्री ट्रेनिंग से एक व्यक्ति में बहुत अधिक बदलाव आ सकता है। मिलिट्री ट्रेनिंग से व्यक्ति में अनुशासन बढ़ता है, मिलिट्री ट्रेनिंग से nationality बढ़ती है। अगर हमें किसी में इन गुणों का सिंचन करना है, तो उसके लिए मिलिट्री ट्रेनिंग आवश्यक होनी चाहिए। विश्व के अनेक ऐसे देश हैं, जहाँ अनिवार्य मिलिट्री ट्रेनिंग

है। इजराइल को हम सब लोग देख रहे हैं। वहां पर बच्चों को पढ़ाई के साथ-साथ मिलिट्री ट्रेनिंग दी जाती है और उनमें अनुशासन तथा अपने देश के प्रति राष्ट्रवाद की भावना मिलिट्री ट्रेनिंग के माध्यम से पैदा की जाती है। इसी तरह से चीन में भी कॉलेज के स्टूडेंट्स को मिलिट्री ट्रेनिंग दी जाती है और जो स्टूडेंट्स अच्छा perform करते हैं, उन्हें दो-तीन महीने के लिए बॉर्डर पर भेजा जाता है। ऐसा ही जर्मनी में है। अमेरिका में भी मिलिट्री ट्रेनिंग का प्रावधान है। इसी तरह से हम बाल्यकाल से अगर बच्चों को मिलिट्री ट्रेनिंग देंगे तो उससे अनेक फायदे होंगे। मुझे तो लगता है कि सच्चे अर्थों में अगर हम राष्ट्रवाद के बारे में सोचें तो राष्ट्रवाद के लिए अनुशासन आवश्यक है। अनुशासन की ट्रेनिंग कहाँ से मिलेगी? आप केवल discipline में खड़े रहो, केवल वही अनुशासन नहीं है। मेरी दृष्टि में अनुशासन का पर्याय, अनुशासन की व्याख्या व्यापक है। जब बच्चे मिलिट्री ट्रेनिंग लेते हैं, एनसीसी की ट्रेनिंग लेते हैं, तब उनमें अनुशासन का सृजन होता है। वहां पर अनुशासन का भाव निर्मित होने से बच्चे को समाज में कैसा व्यवहार करना है, एक-दूसरे के साथ कैसा व्यवहार करना है, एक-दूसरे के साथ किस तरह से बात करनी है, उसकी जिम्मेदारी क्या है, वह व्यक्तिगत जिम्मेदारी भी उस ट्रेनिंग के जरिए उसे मालूम होती है। इस तरह से व्यक्ति को जब एक बार अपनी जिम्मेदारी मालूम हो जाएगी कि यह मेरी ज़्युटी है, तो वह देश के लिए अच्छा होगा। सर, मुझे ऐसा लगता है कि जो रास्ते पर चलने वाले लोग हैं, वे अनुशासित तरीके से चलते हैं, लेकिन कई बार वे अकस्मात् मृत्यु का शिकार हो जाते हैं। हिन्दुस्तान में हर साल दो लाख लोग अकस्मात् मर जाते हैं, अकस्मात् अपना जीवन गंवा देते हैं। वे अकस्मात् ही अपना जीवन गंवा देते हैं क्योंकि उनके पास discipline नहीं हैं, क्योंकि वे रूल्स और रेगुलेशंस को फालो नहीं करते हैं। जब लोग रूल्स और रेगुलेशंस को फालो करेंगे तो उनकी अकस्मात् मृत्यु की संभावना कम होगी। ऐसी भावना उनमें कहाँ से आएगी? मुझे लगता है कि वह भावना discipline से आएगी। जब हर व्यक्ति में discipline का निर्माण हो जाएगा तो मुझे लगता है कि देश में अच्छा राष्ट्रवाद खड़ा हो सकेगा। राष्ट्रवाद कहाँ से खड़ा होगा? राष्ट्रवाद कैसे खड़ा होगा? मैं उसे मिलिट्री ट्रेनिंग से जोड़ता हूँ। मिलिट्री ट्रेनिंग लेकर वे discipline का, अनुशासन का पालन करने लग जाएंगे। जब वे स्वयं अनुशासन का पालन करेंगे तो उन्हें हर चीज का ख्याल होता है। इस प्रकार अनुशासित व्यक्ति का कमिटमेंट बढ़ता है कि मेरी ज़्युटी क्या है, मेरी जिम्मेदारी क्या है, समाज में मुझे कैसा बिहेव करना है, राष्ट्र के प्रति मेरी क्या जिम्मेदारी है। Discipline उसे यह सब याद कराता है। इस प्रकार मिलिट्री ट्रेनिंग लेने के बाद जो समाज खड़ा होगा, वह जिम्मेदारी से काम करेगा। ऐसे व्यक्ति जब समाज में काम करने लगेंगे, चाहे वे आफिसर हैं, पॉलिटिशियन हैं या किसी भी क्षेत्र में हों, वे जिस भी क्षेत्र में होंगे, वहाँ discipline उनको यह बात याद दिलाएगा कि उनकी जिम्मेदारी क्या है? अगर कोई पॉलिटिशियन है तो प्रजा के प्रति उसका कमिटमेंट है, उसे प्रजा के बीच में रहना है, जनता की सेवा करनी है, वह कमिटमेंट उसे कौन याद दिलाएगा? यह कमिटमेंट उसे उसका discipline याद दिलाएगा। वह discipline कहाँ से आएगा? मुझे लगता है कि वह discipline मिलिट्री ट्रेनिंग से आएगा, एनसीसी ट्रेनिंग से आएगा। इसी प्रकार जब बच्चा पढ़ाई पूरी करके अफसर बन जाएगा, अफसर बनने के बाद उसके अंदर जो अनुशासन का भाव होगा, उसके पास जो discipline होगा, उससे उसे लगेगा कि मुझे जो दायित्व मिला है, मेरी जो जॉब है, मेरी जो नौकरी है, मेरी जो सर्विस है, उस सर्विस का कमिटमेंट क्या है? मेरी सर्विस का कमिटमेंट है कि जनता का काम करना है, गवर्नमेंट की नीति का इम्प्लीमेंटेशन करना है। उस नीति का इम्प्लीमेंटेशन करने के लिए उसे कौन प्रेरित करेगा? मुझे लगता है कि उसके अंदर जो अनुशासन होगा, जिस प्रकार की ट्रेनिंग उसे मिली होगी, वह उसे इस सबके लिए प्रेरित करेगी

3.00 P.M.

[श्री मनसुख एल. मांडविया]

क्योंकि वह ट्रेनिंग जब मिलिट्री टाइप की ट्रेनिंग होगी, तो वह अनुशासन में रहेगा और अनुशासित तरीके से देश की सेवा करेगा। मुझे लगता है कि कुल मिलाकर यह राष्ट्र की सेवा ही होगी कि वह एक अच्छा नागरिक बन जाए, एक अच्छा आफिसर बन जाए, अच्छी तरह से देश का नागरिक बन जाए, अच्छी तरह से पॉलिटिशियन बने। सार्वजनिक जीवन में अनुशासित रूप में काम करने वाला कोई भी व्यक्ति हो, वह अपनी जिम्मेदारी से, डिसिप्लेन से काम करेगा, तो मुझे लगता है कि वह राष्ट्र का ही काम करेगा। राष्ट्रवाद को प्रोत्साहित करने के लिए, राष्ट्रवाद को बल देने के लिए भी मिलिट्री ट्रेनिंग मुझे आवश्यक लगती है।

अभी आप देख रहे हैं कि सारे विश्व में टेरेरिस्ट एक्टिविटीज़ चल रही हैं। देश में साइबर क्राइम बढ़ गया है, सोशल मीडिया का ग्राफ भी देश में बढ़ गया है, तरह-तरह की बातें समाज में सोशल मीडिया के माध्यम से घूमती रहती हैं। ऐसी स्थिति में जनता का सेल्फ असेसमेंट कैसे होगा? मुझे ऐसा लगता है कि एक डिसिप्लेन वाले समाज का निर्माण हो, जिसमें मिलिट्री ट्रेनिंग करके आए हुए व्यक्ति अपना सेल्फ असेसमेंट कर पाएंगे। अगर वे सेल्फ असेसमेंट कर पाएंगे तो समाज में वे अपना अच्छा कंट्रीब्यूशन कर पाएंगे। हमारे सैनिक बॉर्डर पर जाते हैं। वे हमारे देश की रक्षा करते हैं, हम उनको वंदन करते हैं और उनकी वंदना करनी भी चाहिए। सिविलियन सोसायटी राष्ट्रभक्ति कैसे कर सकती है? सभी लोग मिलिट्री ट्रेनिंग लेकर बॉर्डर पर चले जाएं और बॉर्डर पर जाने के लिए ही मिलिट्री ट्रेनिंग आवश्यक होगी, ऐसा नहीं है। बॉर्डर पर तो हमारा मिलिट्री का आफिसर जाए और देश के लिए काम करे और देश के लिए काम करने को प्रोत्साहित करने के लिए वह अन्य लोगों को प्रोत्साहित करे। जब देश में आपातकालीन स्थिति निर्माण हो जाती है, हमारे देश को केवल बाहर के देश से ही खतरा नहीं रहता है बल्कि इंटरनल सिक्योरिटी का भी खतरा रहता है। बाहर की और अंदर की आपातकालीन स्थिति से निपटने के लिए हमारे पास कैडेट्स तैयार होंगे, हमारे पास मिलिट्री ट्रेनिंग वाले जवान तैयार होंगे, हमारे पास मिलिट्री ट्रेनिंग वाले नागरिक तैयार होंगे, चाहे उन्होंने मिलिट्री की ट्रेनिंग ली हो, चाहे उन्होंने एनसीसी की ट्रेनिंग ली हो, तो हम उसका अच्छी तरह से मुकाबला कर सकते हैं।

[उपसभाध्यक्ष (डा.ई.एम. सुदर्शन नाच्चीयप्पन) पीठासीन हुए]

एक नागरिक जिसकी समाज के प्रति जिम्मेदारी है, जिसकी राष्ट्र के प्रति जिम्मेदारी है, केवल जिम्मेदारी ही नहीं बल्कि उसकी दिशा, उसकी दृष्टि अलग सी रहती है और वैसी दृष्टि से वह समाज में काम करेगा, वैसी दृष्टि से वह हमारी मिलिट्री का हौसला बढ़ाएगा। वैसी दृष्टि से समाज में इंटरनल स्थिति मजबूत होगी, उनका मूवमेंट होगा, उनका व्यवहार होगा, उनका सिस्टम होगा, उसी तरह से हमारे देश के नागरिक काम करेंगे। मुझे लगता है कि ऐसी स्थिति को समग्र तरीके से निपटने में आसानी होगी। मुझे लगता है कि मिलिट्री ट्रेनिंग लेकर खड़ा हुआ समाज, अच्छा राष्ट्रवादी समाज, अच्छी तरह से नेशनलिस्ट नागरिकों का निर्माण कर सकते हैं। जब हमारे देश में आजादी की मूवमेंट थी, उस वक्त इतनी एजुकेशन नहीं थी। इतनी एजुकेशन नहीं होने के बावजूद भी, उस वक्त नेशनलिटी हाइट पर थी। अनपढ़ लोग थे, यातायात की इतनी अच्छी व्यवस्था नहीं थी, फिर भी जब गांधी जी की सभा होती थी, पंडित जवाहर लाल नेहरू जी की

सभा होती थी, इतिहास गवाह है कि उसमें लाखों लोग इकट्ठे होते थे जबकि उस वक्त यातायात की कोई व्यवस्था नहीं थी। लोग बैलगाड़ी लेकर आते थे, तांगा लेकर आते थे, दो-तीन दिन प्रवास करते हुए आते थे और उस समय एक जबरदस्त राष्ट्रवाद का जज़्बा था। बाद में आज़ादी के थोड़े समय के बाद, वह धीरे-धीरे डाउन होने लगा। 15 अगस्त और 26 जनवरी हमारे नेशनल डेज़ हैं, उस दिन की स्थिति अब क्या हुई है? अब 15 अगस्त और 26 जनवरी स्टूडेंट का एक त्योहार हो, ऐसा हो गया है। इसमें पहले गांव के लोगों का पार्टिसिपेशन होता था। जब गांव में ध्वजारोहण होता था, तो उस वक्त गांव के लोग भी उसमें जाते थे, थोड़े-थोड़े लोग इकट्ठे भी होते थे, लेकिन बदलते समय में मुझे लगता है कि नेशनलिटी डाउन हो रही है। हमारे देश में राष्ट्रवाद धीरे-धीरे कम हो रहा है। 15 अगस्त और 26 जनवरी हमारे राष्ट्रीय दिन हैं, इनमें जनता की उपस्थिति अब कम होने लगी है। इसलिए हमारे देश की जनता में, हमारे नागरिकों में फिर से राष्ट्रवाद प्रबल हो, उनके लिए कोई अच्छा उपाय हो, तो मुझे लगता है कि एक अच्छे उपाय के रूप में सभी नागरिकों को मिलिट्री ट्रेनिंग मिले। मिलिट्री ट्रेनिंग के माध्यम से सभी नागरिक प्रशिक्षित हों और जब ऐसे प्रशिक्षित नागरिकों में राष्ट्रवाद बढ़ेगा, तो देश की आपात स्थिति में, देश की विकट स्थिति में इनका कंट्रीब्यूशन बढ़ेगा। जैसे अभी देश में स्वच्छता अभियान चल रहा है। गांधी जी ने उस वक्त स्वच्छता अभियान को अपने काम के साथ जोड़ा था। अभी देश को आजाद हुए 68 वर्ष हो गए हैं, लेकिन देश में ऐसी स्थिति पैदा हो गई है कि हमें फिर वही स्वच्छता का नारा लगाना पड़ता है। व्यक्ति अपना धर्म, अपनी जिम्मेदारी, अपनी रेस्पॉसिबिलिटी नहीं समझते हैं, वे अपनी रेस्पॉसिबिलिटी क्यों नहीं समझते हैं? व्यक्ति कब अपनी जिम्मेदारी को समझेंगे? ये जिम्मेदारी कहां से आएगी? उसको अपनी जिम्मेदारी का ज्ञान कहां से मिलेगा? उसको अपनी जिम्मेदारी की प्रेरणा कहां से मिलेगी? मुझे लगता है कि अनुशासित समाज और अनुशासित नागरिक के लिए उसकी व्यक्तिगत जिम्मेदारी का ख्याल रखकर ही यह स्वच्छता अभियान चलाया गया है। इसको हर व्यक्ति यह समझे कि यह मेरी जिम्मेदारी है, यह मेरा काम है। मैं गांव के लोगों का धन्यवाद करना चाहता हूं। अभी जो थोड़ा सा भी discipline या system बचा है, यह शहर के बजाए गांवों में ज्यादा बचा हुआ है। अभी भी गांव के लोग थोड़े अनुशासित दिखते हैं। जब गांव की कोई समस्या होती है, तो गांव में सभी लोग इकट्ठे हो जाते हैं। वे गांव की समस्या दूर करने के लिए सामूहिक कंट्रिब्यूशन करते हैं। गांवों में सबसे ज्यादा भागीदारी भी गांव के लोग ही करते हैं और यह भागीदार शहर में कम हो रही है। ऐसी स्थिति निर्मित हुई है। ऐसी स्थिति में हमें क्या करना चाहिए, हमें अपने देश को कैसे आगे बढ़ाना चाहिए? देश में आजादी के समय जैसा राष्ट्रवाद था, वैसा राष्ट्रवाद देश में कैसे लाना चाहिए, इसके लिए क्या-करना चाहिए? मुझे लगता है कि इसके लिए NCC और Military की ट्रेनिंग कम्पलसरी करनी चाहिए। जब यह ट्रेनिंग कम्पलसरी हो जाएगी, तो फिर जो सामाजिक परिवर्तन है, वह कभी यू टर्न नहीं लेगा। यह धीरे-धीरे लम्बे समय की प्रक्रिया होती है। Now, we have to take initiative. आज जब हम उनके बारे में एक्शन लेंगे, तो आज के पढ़े हुए वे नागरिक 20-25 साल के बाद समाज में आएंगे, उस वक्त हम परिवर्तन को देख पाएंगे। मुझे लगता है कि वर्तमान स्थिति में मिलिट्री ट्रेनिंग कम्पलसरी की जाए। यदि आप मिलिट्री ट्रेनिंग कम्पलसरी नहीं कर पाते, तो एनसीसी को सभी स्कूलों में कम्पलसरी कर दीजिए। हम जब स्कूल में पढ़ते थे, उस वक्त जितनी संख्या में स्टूडेंट्स एनसीसी में जाते थे, अभी उतनी संख्या में नहीं जा रहे हैं। हम समाज में और स्कूल में भी देखते थे कि जो एनसीसी वाले स्टूडेंट्स हैं और जो एनसीसी वाले स्टूडेंट्स नहीं हैं, उनकी वाणी, विवेक और बर्ताव में भी हम डिफ़रेंस देखते थे। हम ऐसा initiative लें कि हम पूरे देश में मिनिमम स्कूल और कॉलेज में पढ़ते हुए सभी छात्रों

[श्री मनसुख एल. मांडविया]

के लिए एनसीसी की ट्रेनिंग कम्पलसरी कर दें। मुझे लगता है कि यह राष्ट्र के लिए बहुत अच्छा होगा। श्री अविनाश राय खन्ना जी जो बिल लेकर आए हैं, मैं इस बिल का दिल से समर्थन करता हूँ और मैं सरकार से अपेक्षा करता हूँ कि वह देश में मिलिट्री ट्रेनिंग कम्पलसरी करें। इससे हमारे देश में एक नया राष्ट्रवादी युग, नया राष्ट्रवादी समाज पैदा होगा। देश की सुरक्षा, देश की सलामती, देश की सरहदों की सुरक्षा के लिए और समाज के मोटिवेशन के लिए मिलिट्री ट्रेनिंग आवश्यक है। मैं इसी भावना के साथ अपना वक्तव्य समाप्त करता हूँ। धन्यवाद।

SHRI BHUPINDER SINGH (Odisha): Mr. Vice-Chairman, Sir, it is good that the hon. Defence Minister is also here in the House. The military training is very essential. Many students in the tribal blocks of the country, irrespective of State, are still not aware what the military is. The parents think that if their children join military, they would never come back from the border. But they do not know how many disciplines are there in the military. It is not that all the disciplines in the army are deployed at the border to fight with the enemy. We see, there have been natural calamities every now and then. And, in these calamities, the casualties are more than the casualties at the border. There have been more casualties in the 21st Century. As we entered into the 21st Century, unfortunately, just immediately after 2002-03, the Left-Wing extremism started growing. Because of that, there have been many casualties, but casualties against whom? Sir, casualties are there only in the tribal areas! Only the tribal people are the victims of the Left-Wing extremism. That is why, in our State Odisha, we requested the Army personnel to come. We asked our District Collectors to educate the youths and also the school-going children. We called their parents also. If you look at the Indian map, if you go through the appointment list, you will find that there are many States from where very, very less people are there in the Defence, be it the Army, be it the Navy or be it the Air Force. That is why, we must recruit unemployed youth there. Competent boys are there in the rural India and, especially, in the tribal belt of this country. When we educate them, we do get some response. But, then, again, we make a block to give appointment to the youths in the Army. From 2000 itself, the number of appointments has reduced. Sir, I want to know how many people are working today in the Defence and what is the plan for the next decade to strengthen our manpower requirements. Which are the States where appointment is the least in the Defence? अगर हम सोचें कि हर स्कूल में यह व्यवस्था हो, तो हो सकता है। डिफेंस मिनिस्टर साहब तो चीफ मिनिस्टर भी रहे हैं, वे बहुत अनुभवी हैं, यह बात नहीं है कि वे गोवा में थे, वे सबकी चिंता करेंगे। गोवा ने पुतर्गीज से लड़ाई भी लड़ी है और आप उसी धरती से आए हैं। आज हमारे लड़के एनसीसी में कम हैं। जब हम लोग एनसीसी में थे तो खूब एक्सरसाइज करते थे। वाइस चेयरमैन साहब, मेरी आपके माध्यम से यह विनती है कि आज अगर हिंदुस्तान में अच्छे दिन लाने हैं, तो सरकार के लिए पोलिटिक्स से ऊपर उठकर कुछ मुद्दे होते हैं, जिनके ऊपर सभी की सहमति होनी चाहिए। अगर इस देश में कुछ कंपलसरी होना चाहिए, तो स्कूल के बच्चों के लिए एनसीसी जरूरी और बहुत जरूरी होनी चाहिए। आपको याद होगा कि जब हम लोग पढ़ते थे, तो स्कूल में कम से कम पीटी क्लासेज रोज होती

थीं। Physical exercise used to take place. लेकिन आज हम खाद्यान्न में जितना फर्टिलाइजर और पॉयजन इनपुट कर रहे हैं, वह खतरनाक है। आज स्कूल में कोई भी एक्सरसाइज नहीं हो पा रही है। जब हम लोग स्कूल में थे और एनसीसी में यूनिफॉर्म पहनकर जाते थे, तो उसका एक प्रभाव होता था। उसमें एक फीलिंग होती थी कि हम जाएंगे और जरूरत पड़ेगी तो देश के लिए लड़ेंगे। There was scout movement also. Honestly speaking, my only desire was to go for Defence, but destiny, by accident, brought me into politics. I confess this very, very honestly that my second choice was the IPS. Being an athlete, being a sportsman of national mark in 400 and 800 metres, it was my desire that I must serve for my country, at the border.

जो लोग दिल से चाहते हैं कि अपने देश के लिए कुछ करें, उनको आज यह स्कोप नहीं मिल रहा है। उन लोगों को नौकरी नहीं मिलती, वे लोग वहां तक पहुँच नहीं पाते हैं। ऐसा इसलिए है क्योंकि पूरब-पश्चिम, उत्तर-दक्षिण से लेकर आगे-पीछे, ऊपर-नीचे तक उनके लिए बोलने वाला कोई नहीं है, उनको आगे आकर लेने वाला कोई नहीं है। यह भी एक विडंबना है। हम इससे दूर नहीं भाग सकते हैं। यह हमारे सामने एक बहुत बड़ी विडंबना है और हम इससे कभी भी दूर नहीं भाग सकते हैं। वाइस चेयरमैन सर, मैं डिफेंस मिनिस्टर साहब का आभारी हूँ कि वे इस चर्चा को बड़े गौर से सुन रहे हैं। वे केवल सुन ही नहीं रहे हैं, नोट भी कर रहे हैं। हम भी उनकी जो बात कर रहे हैं, वह दिल से कर रहे हैं। What I am speaking here, I am speaking from my heart. When heart speaks, there is some strength in it. When anybody speaks from his or her heart, it always benefits the country and the countrymen. इसलिए मैं यही रिक्वेस्ट करूँगा कि इस पर जो खर्च आता है, इसके ऊपर और चर्चा हो और किसी भी हालत में एनसीसी को हर स्कूल के बच्चे के लिए कंपलसरी किया जाए। मैं उम्मीद करूँगा कि जब मंत्री जी रिप्लाय देंगे, तो वे इसके बारे में एक डाटा देंगे, एक चित्र देंगे। भारत वर्ष के जो पिछड़े राज्य हैं, वहां पर आज आदिवासी लड़के कुर्बानी दे रहे हैं, गावों में इनोसेंटली नक्सलियज के माध्यम से मारे जा रहे हैं। हम लोगों ने हमारे यहां स्टेट पुलिस में ट्राइबल लड़कों को रखा है और तीन साल के अन्दर in our State, our Chief Minister, hon'ble Naveen Patnaik, is giving them jobs without interview. Out of thirty districts, हमारे 23 जिले नक्सलियज से प्रभावित हैं। चाहे झारखंड हो, ओडिशा हो, छत्तीसगढ़ हो, वे भी इससे प्रभावित हैं। आज जम्मू-कश्मीर में भी जो हो रहा है, अगर वहां के यंग लड़कों को मौका दिया जाएगा, तो अच्छा होगा। आज पंजाब में जो समस्या आई है, इस पर भी हमें ध्यान देना चाहिए। पंजाब के लड़के आज तैयार हैं। अगर वहां परिवार में एक भी बेटा है, तो वह भी आज तैयार है। कुछ राज्य ऐसे हैं, चाहे वह राजस्थान हो, राजपूताना हो, हमारी जो आर्मी है, उसके अन्दर हमें यह देखना है कि उसकी संख्या उसमें लानी चाहिए। आप इसको बैलेंस करना चाहते हैं, कीजिए, लेकिन जिनका इसमें ज्यादा इंटरेस्ट है, उनको उससे दूर मत रखिए। इसीलिए हमारे माननीय अविनाश राय खन्ना जी यह जो बिल लाए हैं, मैं इसका हृदय से समर्थन करता हूँ। मैं उम्मीद करता हूँ, चाहे इस पर अन्य सदस्य बोलें या न बोलें, कि इसके साथ पूरे हाउस की सहमति है कि हमारे नौजवान, जो तैयार हैं, जो स्पोर्ट्सपर्सन हैं, उनको मौका मिले। Those sportspersons who have brought laurels for us at the Asian Games, at the Commonwealth Games at the world level, हमने उनके लिए स्कोप निकाला है। डिस्ट्रिक्ट और स्टेट लेवल के लिए भी we are searching talent from the rural India. वे लोग भी मैट्रिकुलेट होकर आ रहे हैं। उनके लिए भी कोई नौकरी की व्यवस्था करनी चाहिए और इसकी ज्यादा पब्लिसिटी होनी चाहिए। ऑनरेबल डिफेंस मिनिस्टर साहब, जो मिलिट्री में जाता है, वह गन लेकर लड़ाई के लिए नहीं जाता है। हम कितने युद्ध लड़े

[श्री मनसुख एल. मांडविया]

हैं, उससे ज्यादा मौतें तो केज़ुअल्टी में होती हैं, साइक्लोन में होती हैं, सुपर-साइक्लोन में होती हैं, एक्सीडेंट्स में इससे ज्यादा मौतें होती हैं। आप इसके बारे में सिलेबस में इसे शामिल करने के लिए मिनिस्ट्री ऑफ एचआरडी से बात करें। You put this input to our children right from Class VI, VII, VIII in the syllabus. यह आने वाले दिनों में बहुत बड़ा काम होगा। आज इस देश में नेशनल इंटीग्रेटी की कमी है। हिन्दुस्तान का जो लोकतंत्र है, हमारी जो डेमोक्रेसी है, वह दुनिया में किसी से कम नहीं है, लेकिन हमारी एक ही कमजोरी है, वह है नेशनल इंटीग्रेशन की। नेशनल इंटीग्रेशन तभी आ सकता है, जब हम स्पोर्ट्स पर ध्यान देंगे। स्पोर्ट्समैन यहां भी आए हैं, अभी हमारे साथी दिलीप कुमार तिकी जी यहां आए हैं, जो इंडियन हॉकी टीम के कैप्टन थे। वे लोग ग्राउंड लेवल से आते हैं, वे सारे भेदभाव भूल जाते हैं। जाति उनके लिए बड़ी चीज़ नहीं है, धर्म उनके लिए बड़ी चीज़ नहीं होती। वे यही देखते हैं कि अपने देश के लिए हम लोग यहां आए हैं और उसके लिए हमें मेडल लेकर जाना है। वैसे ही मिलिट्री में जो लड़का जाता है, तो वह भी यही सोचता है। उसके सामने जाति नहीं रहती, उसके सामने प्रांत की बात नहीं रहती, उसके सामने केवल तिरंगा रहता है और उस तिरंगे को लेकर वह आगे बढ़ना चाहता है। Therefore, it will also support national integration. Once it supports national integration, there will be less communal violence in this country, which we have been debating here time and again. We will be going to debate this in future also. इसीलिए मैं उम्मीद करूंगा कि ऑनरेबल डिफेंस मिनिस्टर इसके बारे में बहुत गौर से सोचेंगे और जो इंटरस्टेड मेम्बर्स हैं, उनको बुला कर इसके बारे में बात करेंगे कि इसके लिए हम क्या कर सकते हैं और कहां से पैसा आएगा। पैसा कभी भी इसके लिए रुकावट नहीं होना चाहिए। आप हर स्कूल में एनसीसी को कंपलसरी करें। With this, I support this Bill. बहुत-बहुत धन्यवाद।

**प्रो. राम गोपाल यादव** (उत्तर प्रदेश) : श्रीमन्, मैं श्री अविनाश राय खन्ना जी द्वारा लाए गए प्रस्ताव का समर्थन करता हूँ।

श्रीमन्, अगर कॉलेजिज में, यूनिवर्सिटीज में, कंपल्सरी मिलिट्री ट्रेनिंग का प्रोविजन होता है, तो उससे बहुत सारे लाभ होंगे। अब तो धीरे-धीरे यह व्यवस्था खत्म ही हो गई है, लेकिन पहले एनसीसी हुआ करती थी। हालांकि अब भी कुछ जगह में है, लेकिन जिस तरीके से पहले बच्चों को ट्रेनिंग दी जाती थी, उस तरीके की व्यवस्था अब नहीं रही है। मैंने देखा है कि इस ट्रेनिंग को प्राप्त करने वाले जो स्टुडेंट्स हुआ करते थे, उनमें आत्मविश्वास, आत्मबल और चरित्र निर्माण की एक भावना पैदा हो जाती थी।

आज स्थिति यह है कि हमारी जो नई पीढ़ी है, वह पश्चिमी सभ्यता के प्रभाव में आ चुकी है। वह उसकी अच्छी बातें तो नहीं सीख रही है, लेकिन वे बातें, जो उन्हें उनके रास्ते से भटकाने वाली हैं, उनकी तरफ वह खिंचती चली जा रही है। वहां पर बहुत सारी अच्छी बातें भी हैं। एक बार मैं टोरंटो में था, वहां मैंने देखा कि बर्फ पड़ी हुई है, लेकिन सड़क पर लड़कियां दौड़ती जा रही हैं, इंटर या अंडरग्रेजुएट क्लासिज की लड़कियां रही होंगी। मैंने बगल के प्लाज़ा पर पूछा कि ये बच्चियां कहां से आ रही हैं, तो उसने कहा कि यह इनका पीटी का पीरियड है, इसी तरह दौड़कर ये 2 किलोमीटर तक जाएंगी और फिर वहां से वापस आएंगी। मैंने उनसे पूछा कि यहां देखने वाला कोई टीचर तो नहीं है, वे बोले कि चाहे कोई टीचर हो या नहीं हो, लेकिन इनमें से कोई भी ऐसी लड़की नहीं है, जो 2 किलोमीटर तक दौड़कर न जाए। चाहे वह पीछे रहे या आगे रहे, इससे कोई मतलब नहीं है,



लेकिन हर हालत में वे 2 किलोमीटर तक जाएंगी और लौटकर वापस आएंगी।

जो सेल्फ डिसिप्लिन होता है, आत्मानुशासन होता है, इसमें अपने आप पर नियंत्रण करने की बात होती है, जो आदमी के जीवन की सबसे बड़ी चीज़ होती है। आदमी में इस सेल्फ डिसिप्लिन को देने का काम, सेल्फ डिसिप्लिन को इंड्यूस करने का काम यह ट्रेनिंग करेगी।

हमने देखा है कि जब भी कहीं पर दंगा-फसाद होता है, मिलिट्री डिप्लॉय की जाती है, तो उस पर सारे वर्ग को भरोसा होता है। आखिर ऐसा क्यों होता है? ऐसा इसलिए होता है क्योंकि जिस ट्रेनिंग से गुजरकर वे मिलिट्री वाले आते हैं, उससे उनके मन में धर्म के नाम पर, जाति के नाम पर कोई भेदभाव नहीं रह जाता है। हर तरह के लोग उन पर भरोसा करते हैं और वे भी बिना किसी भेदभाव के अपनी कार्यवाही करते हैं। अगर यह धारणा शुरू से ही बच्चों के मन में डाल दी जाएगी, जैसा इसमें प्रपोज किया गया है कि मेट्रिकुलेशन से लेकर ग्रेजुएशन लैवल तक के छात्रों के लिए इसका प्रोविजन किया जाएगा, यह देश के लिए एक बहुत अच्छा कार्य होगा। इससे बच्चों में पॉजिटिव भावना पैदा होगी और जो विघटनकारी बातें उनके दिमागों में आती हैं या जो देश को तोड़ने वाली शक्तियां उनमें भर देती हैं, वे विघटनकारी शक्तियां भी उसमें सफल नहीं हो सकेंगी। जब पूरी पीढ़ी स्वयं ही यह सोच लेगी कि हमें देश के लिए काम करना है, देश को एकजुट रखने के लिए काम करना है, देश को मजबूत बनाने के लिए काम करना है, तो कोई भी उन्हें उनके पथ से डिगा नहीं सकेगा। यह भावना तभी पैदा होगी, जब इसी तरह का कोई काम आरम्भ हो, जिससे शुरू से ही उनके दिमाग में ऐसी चीजें डाली जाएं, ताकि गलत किस्म के विचार उनके दिमाग में आ ही न सकें। उनके दिमाग में प्राथमिकता के स्तर पर देश की रक्षा, देश की सुरक्षा, देश की एकता और देश के विकास की बात ही हो।

एक कहावत है, 'Empty mind is the devil's workshop.' अगर एक घंटा आप इस काम के लिए दे देते हैं, करिकुलम में इसके लिए प्रोविजन करते हैं, तो यह देश के लिए बहुत अच्छा होगा। हालांकि हम जानते हैं कि यह प्राइवेट मेम्बर्स बिल है और आज तक जाने कितने प्राइवेट मेम्बर्स बिल्स पर हम लोग यहां चर्चा कर चुके हैं और करते रहेंगे, लेकिन बहुत रेयर केसिज़ में, कोई एक-आध रेजोल्यूशन पास होता है। लेकिन बहुत से अच्छे प्रस्ताव भी होते हैं, यह उनमें से एक है। देश के माननीय रक्षा मंत्री यहां बैठे हुए हैं और सारे देश में उनकी ख्याति एक बहुत ही ईमानदार और अच्छे राजनेता की है। इसलिए, यह प्रस्ताव यहां पास हो या न हो, लेकिन इस पर जरूर विचार होना चाहिए कि स्टूडेंट्स के लिए एक निश्चित स्टैंडर्ड से ऊपर, चाहे वह हाई स्कूल ले लें या फर्स्ट ईयर से लेकर ग्रेजुएशन तक ले लें, एक ऐसा करिकुलम बनाया जाए, जिसमें कम से कम 60 मिनट का समय लड़कों के लिए एनसीसी टाइप या फिजिकल ट्रेनिंग टाइप हो। इसके लिए अलग से व्यवस्था करनी पड़ेगी। देश निर्माण के लिए और चरित्र निर्माण के लिए पैसा कोई बहुत ज्यादा बड़ी चीज नहीं होती है। वैसे भी एजुकेशन का बजट सबसे ज्यादा होता है। सारे राज्यों में अगर सबसे ज्यादा पैसा खर्च होता है, तो शिक्षा पर ही होता है। हमारे उत्तर प्रदेश में तो प्राइमरी, माध्यमिक और हायर एजुकेशन का जो टोटल एक्सपेंडीचर है, जो बजट है, वह जितना रेवेन्यू उत्तर प्रदेश का है, उसका तीन-चौथाई तो केवल टीचर्स के वेतन पर चला जाता है। जब आप इतना ज्यादा खर्च करते हैं, तो एक-एक आदमी रखा जा सकता है। आप तो कामटी में ट्रेनिंग देते थे। एनसीसी के जो फिजिकली फिट लेक्चरर्स हुआ करते थे, वे सेकंड लेफ्टिनेंट हुआ करते थे, अब तो शायद आपने सेकंड लेफ्टिनेंट की पोस्ट खत्म कर दी है और लोगों को सीधे लेफ्टिनेंट बना दिया। वे ट्रेनिंग करने जाते थे और उसके बाद एनसीसी की ट्रेनिंग देते थे। मैं खुद कई वर्षों तक एनसीसी का कैडेट रहा हूँ और मैंने वह



[प्रो. राम गोपाल यादव]

ट्रेनिंग ली है, तो मैं जानता हूँ कि कुछ पैसा खर्च होगा। लड़के नहीं आते थे, तब आपने रिफ्रेशमेंट की व्यवस्था भी की, ताकि बच्चे आते रहें, क्योंकि तब स्कूल के बाद के ऑवर्स में ट्रेनिंग रखी जाती थी। वह जब रखेंगे, तब दिक्कत होगी और अटेंडेंस कम होगी। चाहे एक पीरियड कम कर दिया जाए, अन्य पीरियड्स में से, लेकिन स्कूल की अवधि में से ही उनकी ट्रेनिंग के लिए टाइम निकाला जाए। आप यहां से अब भी एनसीसी की व्यवस्था करते हैं, उसका दायरा ही बढ़ा दें और उसकी मॉनिटरिंग ठीक होती रहे। उसका करिकुलम पढ़ने में भी आ जाए। जैसे, मिलिट्री स्टडीज़ है, मिलिट्री स्टडीज़ से लोग रिसर्च करते हैं, एमए करते हैं। यह युनिवर्सिटीज़ में एक सब्जेक्ट है। तो उस तरह से उसका इस लेवल पर करिकुलम बनाने के लिए शिक्षाविदों, रिटायर्ड और सर्विंग जनरल्स और आर्मी के बड़े अधिकारियों से मिलकर एक कमेटी बनाएँ। उसका एक करिकुलम बनाने के लिए एक कमेटी बनाएँ, जो अपनी रिपोर्ट दे और उसके आधार पर कोई कार्रवाई की जाए, तो यह एक बहुत बड़ा रचनात्मक कदम होगा और जो बच्चे स्कूलों से निकल कर मॉल्स में चले जाते हैं या सिनेमाघरों में चले जाते हैं, उसमें भी कमी आएगी। मैं आपको बताता हूँ कि उसमें निश्चित तौर पर कमी आएगी, क्योंकि दिल और दिमाग आप कॉलेजेज़ में चले जाइए, दिल्ली वगैरह को छोड़िए, यहां तो 99 परसेंट और 98 परसेंट वाले दाखिला पाते हैं, वे लोग तो पढ़ने वाले हैं ही, वे तो स्कूलों में जाएंगे और पढ़ेंगे। लेकिन, जो रूरल इंडिया है, ज्यादातर वहां से लोग आर्मी में जाते हैं। क्योंकि दिल्ली में जो पढ़ते हैं, वे ऑफिसर लाइन में जाते हैं, कुछ लोग या एकाध परसेंट या एकाध परसेंट भी नहीं, ज़ीरो पॉइन्ट कुछ परसेंट लोग वहां जाते होंगे। जो सिपाही है या जो आर्मी में बंदूक लेकर चलता है या राइफल लेकर चलता है या बीएसएफ में या सीआरपीएफ में बॉर्डर पर रहता है अथवा जिन्हें मिलिटेंट्स का सामना करना पड़ता है, वे सब साधारण परिवार के लोग होते हैं। उन स्कूलों की स्थिति यह है कि लोग स्कूलों में नाम लिखाए हुए हैं, लेकिन 50 परसेंट वहां नहीं आ रहे हैं। अगर इस तरह की ट्रेनिंग दी जाने लगेगी, तो मैं आपसे निश्चित रूप से यह कह सकता हूँ, मैं तो जीवन भर अध्यापक रहा, कि इससे स्कूलों में भी विद्यार्थियों की उपस्थिति बढ़ जाएगी, इनमें आत्म-विश्वास बढ़ेगा, ये खराब रास्ते पर जाने से बचेंगे। इससे देश के प्रति, देश के सम्मान के प्रति, देश की रक्षा के प्रति, देश के विकास के प्रति उनके मन में ज्यादा लगाव होगा। इस पर माननीय मंत्री जी सकारात्मक ढंग से सोचें।

महोदय, मैं आपके माध्यम से माननीय मंत्री जी से अनुरोध करूंगा कि वे इस पर पॉजिटिव रुख रखें, भले ही यह विधेयक पारित हो या न हो, लेकिन पूरे सदन की मंशा इसी तरह की है कि इस तरह की कोई ट्रेनिंग दी जानी चाहिए। इससे बच्चे एन्गेज होंगे। अगर वे फिजिकली एन्गेज्ड रहेंगे, तो वे थोड़े से थके मांटे घर जाएंगे, तो वे इधर-उधर नहीं भागेंगे। इन्हीं शब्दों के साथ आपको फिर धन्यवाद देते हुए कि आपने मुझे इस पर बोलने का अवसर दिया और माननीय रक्षा मंत्री जी यहां बैठे हुए हैं, वे सारे लोगों की बात गंभीरतापूर्वक सुन रहे हैं और नोट भी कर रहे हैं। मैं उनको भी धन्यवाद देता हूँ और मैं उम्मीद करता हूँ कि आने वाले दिनों में कोई न कोई रचनात्मक कदम हिन्दुस्तान के कालेजेज़ और विश्वविद्यालयों के लिए आप इस दिशा में उठाएंगे। धन्यवाद।

**चौधरी मुनव्वर सलीम** (उत्तर प्रदेश): माननीय उपसभाध्यक्ष महोदय, अविनाश खन्ना साहब का प्राइवेट मेम्बर बिल मेरी निगाह में आज इतिहास बन गया। मुझे इस हाउस में दो साल से अधिक हुए। माननीय उपसभाध्यक्ष महोदय, मैं पहली बार देख रहा हूँ कि किसी प्राइवेट मेम्बर बिल पर मेरी पार्टी के नेता, प्रो. राम गोपाल यादव जी इतनी गंभीरता से यहां बैठे और उसका समर्थन किया। मैं पूरी जिम्मेदारी से कहता हूँ कि अविनाश खन्ना साहब ने कंपलसरी मिलिट्री एजुकेशन बिल को लाकर जो तलाश किया है, वह यह है कि नैतिक मूल्यों में जो लगातार गिरावट आ रही है, देश के नौजवानों

میں جو लगातار بھٹکاوی کی स्थिति آ رہی ہے، وہ رُکے۔ انکی منشا پवित्र है।

माननीय उपसभाध्यक्ष महोदय, हम देखते हैं कि आज मुल्क में कहीं आतंकवाद है, कहीं नक्सलवाद है, कहीं जातिवाद है, कहीं संप्रदायवाद है, अगर इन तमाम बातों से मुल्क को मुक्त कराना है, तो मैं यह मानता हूँ कि मेरे नेता, प्रो. राम गोपाल यादव जी ने जो कहा कि नैतिक मूल्यों में जो गिरावट आई है, उसको रोकने के लिए मिलिट्री एजुकेशन लाजिमी है।

माननीय उपसभाध्यक्ष महोदय, दरअसल इस बिल का ताल्लुक हिफाजत और मोहब्बत, दोनों से है। मैं कुछ और आगे जाकर कहना चाहता हूँ कि जब मिलिट्री की ट्रेनिंग होती है, तो हिन्दू-मुस्लिम-सिख-ईसाई, सब एक साथ बैठ कर खाते हैं, एक साथ जंग और जिहाद करते हैं, एक साथ दुश्मन पर हमला करते हैं, एक साथ दुश्मन का मुकाबला करते हैं। चूँकि मुल्क को मजबूत बनाने के लिए अनुशासन और मोहब्बत, दोनों की बराबर जरूरत है और ये मिलिट्री एजुकेशन से पैदा हो सकती है। मैं अविनाश खन्ना जी के दर्द को सलाम करता हूँ। अभी पूर्व वक्ता, मेरे भाई बोल रहे थे कि उन्होंने हिन्दुस्तान की आजादी से पहले जो एहतजाज हो रहे थे, जो एजिटेशन हो रहे थे, उनका तजकिरा करते हुए अनुशासित राजनीतिक सिपाहियों का तजकिरा किया था। हम समाजवादी इस बात को जानते हैं कि अनुशासन ही अपने मकसद को हासिल कराने का सबसे बड़ा अस्त्र होता है और अगर मिलिट्री एजुकेशन इस देश में लाजिमी कर दी जाएगी, तो इस संबंध में प्रो. राम गोपाल यादव जी ने सही कहा कि मुल्क में राष्ट्रवादी भावना में जो लगातार गिरावट आ रही है, उसमें इजाफा होगा और लोग मुल्क से मोहब्बत करना सीखेंगे। नौजवानों की सोच में जो लगातार खराबी पैदा हो रही है, उसमें सुधार आएगा।

माननीय उपसभाध्यक्ष महोदय, हम चाहते हैं कि शिक्षा के अंदर जब मिलिट्री एजुकेशन की बात आए, तो फिर उसके अंदर यह बात भी आनी चाहिए कि हमारे हिन्दुस्तान की जो मुहब्बत की दास्तानें हैं, जिससे हिन्दुस्तान महाशक्ति बना है, जिससे हिन्दुस्तान ने देश और दुनिया में अपना नाम किया है, जिसके माध्यम से हिन्दुस्तान ने आजादी हासिल की है, वे तमाम लोग अनुशासित भी थे और मोहब्बत करने वाले भी थे। मैं अविनाश राय खन्ना जी के दर्द को सलाम करता हूँ और इस बिल का समर्थन करता हूँ। मैं उम्मीद करता हूँ कि यह बिल, जिस पर आज प्रो. राम गोपाल यादव जी ने भी अपने समर्थन का इजहार किया है, माननीय रक्षा मंत्री जी इसे गम्भीरता से लेंगे। यह यहां पास हो या न हो, लेकिन अपनी नीतियों में परिवर्तन करके वे मिलिट्री एजुकेशन को लाजिमी करेंगे। शुक्रिया।

† چودھری منور سلیم (اٹر پردیش) : مائنے اپ سبھا ادھیش مہودے، اویناش کھنہ صاحب کا پرائیویٹ ممبر بل میری نگاہ میں آج اتہاس بن گیا۔ مجھے اس ہاؤس میں دو سال سے زیادہ ہو گئے۔ مائنے اپ سبھا ادھیش مہودے، میں پہلی بار دیکھ رہا ہوں کہ کسی پرائیویٹ ممبر بل پر میری پارٹی کے نیٹا، پروفیسر رام گوپال یادو جی اتنی گمبھیرتا سے یہاں بیٹھے اور اس کا سمرتھن کیا۔ میں پوری ذمہ داری سے کہتا ہوں کہ اویناش کھنہ صاحب نے کمپلٹری ایجوکیشن بل کو لا کر جو تلاش کیا ہے، وہ یہ ہے کہ نیتک مولیوں میں جو لگاتار گراوٹ آ رہی ہے، دیش

†Transliteration in Urdu script.

کے نوجوانوں میں جو لگاتار بھٹکاؤ کی حالت آ رہی ہے، وہ رکے۔ ان کی منشا پاکیزہ ہے۔

مائنے اپ سبھا ادھیکش مہودے، ہم دیکھتے ہیں کہ آج ملک میں کہیں آتک واد ہے، کہیں نکسلواد ہے، کہیں جاتی-واد ہے، کہیں سمپردائے-واد ہے، اگر ان تمام باتوں سے ملک کو مکت کرنا ہے، تو میں یہ مانتا ہوں کہ میرے نیتا، پروفیسر رام گوپال یادو جی نے جو کہا کہ نیتک مولیوں میں جو گراوٹ آئی ہے، اس کو روکنے کے لئے ملٹری ایجوکیشن لازمی ہے۔

مائنے اپ سبھا ادھیکش مہودے، دراصل اس بل کا تعلق حفاظت اور محبت، دونوں سے ہے۔ میں کچھ اور آگے جاکر کہنا چاہتا ہوں کہ جب ملٹری کی ٹریننگ ہوتی ہے، تو بندو-مسلم-سکھ-عیسائی، سب ایک ساتھ بیٹھ کر کھاتے ہیں، ایک ساتھ جنگ اور جہاد کرتے ہیں، ایک ساتھ دشمن پر حملہ کرتے ہیں، ایک ساتھ دشمن کا مقابلہ کرتے ہیں۔ چونکہ ملک کو مضبوط بنانے کے لئے انوشاسن اور محبت، دونوں کی برابر ضرورت ہے اور یہ ملٹری ایجوکیشن سے پیدا ہو سکتی ہے۔ میں اویناش کھنہ جی کے درد کو سلام کرتا ہوں۔ ابھی پچھلے وکتہ، میرے بھائی بول رہے تھے کہ انہوں نے، بندوستان کی آزادی سے پہلے جو احتجاج ہو رہے تھے، جو ایجیٹیشن ہو رہے تھے، ان کا تذکرہ کرتے ہوئے انوشاست راجنیتک سپاہیوں کا تذکرہ کیا تھا۔ ہم سماج وادی اس بات کو جانتے ہیں کہ انوشاسن ہی اپنے مقصد کو حاصل کرانے کا سب سے بڑا استر ہوتا ہے اور اگر ملٹری ایجوکیشن اس دیش میں لازمی کر دی جائے گی، تو اس سمبندھ میں پروفیسر رام گوپال یادو جی نے صحیح کہا کہ ملک میں راشٹروادی بھاونام میں جو لگاتار گراوٹ آ رہی ہے، اس میں اضافہ ہوگا اور لوگ ملک سے محبت کرنا سیکھیں گے۔ نوجوانوں کی سوچ میں جو لگاتار خرابی پیدا ہو رہی ہے، اس میں سدھار آئے گا۔

مائنے اپ سبھا ادھیکش مہودے، ہم چاہتے ہیں کہ شکشا کے اندر جب ملٹری ایجوکیشن کی بات آئے، تو پھر اس کے اندر یہ بات بھی آنی چاہئے کہ ہمارے بندوستان کی جو محبت کی داستانیں ہیں، جس سے بندوستان مہا شکتی بنا ہے، جس سے بندوستان نے دیش اور دنیا میں اپنا نام کیا ہے، جس کے مادھیم سے بندوستان

نے آزادی حاصل کی ہے، وہ تمام لوگ انوشاست بھی تھے اور محبت کرنے والے بھی تھے۔

میں اویناش رائے کہتے جی کے درد کو سلام کرتا ہوں اور اس بل کا سمرتھن کرتا ہوں۔ میں امید کرتا ہوں کہ یہ بل، جس پر آج پروفیسر رام گوپال یادو جی نے بھی اپنے سمرتھن کا اظہار کیا ہے، مائٹے رکشا منتری جی اسے گمبھیرتا سے لیں گے۔ یہ یہاں پاس ہو یا نہ ہو، لیکن اپنی نیتوں میں تبدیلی کر کے وہ ملٹری ایجوکیشن کو لازمی کریں گے۔ شکریہ۔ (ختم شد)

THE VICE-CHAIRMAN (DR. E.M. SUDARSANA NATCHIAPPAN): Mr. Tiruchi Siva. You are not speaking. Okay. Now, Dr. Satyanarayan Jatiya. Your name was called. In the last Session, your speech could not be completed. Would you like to make any final observation on this?

**डा. सत्यनारायण जटिया** (मध्य प्रदेश): सर, मैं इस पर बोलना चाहता हूँ। जैसा कि अभी हमारे पूर्व वक्ताओं ने कहा है, सैन्य प्रशिक्षण अनुशासन का पर्याय है। पहले स्व पर शासन, फिर अनुशासन। पहले हम अपने आपको नियंत्रित करें, क्योंकि व्यक्ति से ही समाज और समाज से ही राष्ट्र का निर्माण होता है। हमने विश्व को अपना परिवार माना है और "वसुधैव कुटुम्बकम्" की बात कही है।

उपसभाध्यक्ष महोदय, जिस श्रेष्ठ उद्देश्य के लिए इस बात को कहा गया है कि अनिवार्य सैन्य प्रशिक्षण होना चाहिए, उसे किसी की मर्जी पर नहीं छोड़ देना चाहिए कि वह चाहे इसको करे या न करे, क्योंकि इसे देश के लिए करना है। देश की आज़ादी के जो दीवाने थे, जिन्होंने देश को आज़ाद कराया और अपने प्राणों की आहुति देकर हमको यह आज़ाद हिन्दुस्तान दिया, उनकी बातों को हमें भूलना नहीं चाहिए। जिस तरह से उन्होंने देश को आज़ाद कराने के लिए कुर्बानियाँ दीं, उसी तरह से इसकी सुरक्षा करने का दायित्व हमारा है। मैं यहां पर राम प्रसाद बिस्मिल जी को याद करना चाहूँगा,

"ऐ शहीदे मुल्कों मिल्लत, हम तेरे ऊपर निसार,  
अब तेरी हिम्मत की चर्चा गैर की महिफल में है।  
सरफरोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है।"

उनके प्रति श्रद्धा रखने वाले अशफाक़ उल्ला ख़ाँ ने कहा,

"उरुजे कामयाबी पर जब कभी हिन्दोस्तां होगा,  
रिहा सैय्याद के हाथों से अपना आशियां होगा,  
चखाएँगे मज़ा बरबादी-ए-गुलशन का गुलची को,  
बहार आ जाएगी उस दिन जब अपना बागबां होगा।"

[डा. सत्यनारायण जटिया]

यह हिन्दुस्तान को हिन्दुस्तान बनाने की तजवीज़ है। यह एक तरीका है, जो होना ही चाहिए, क्योंकि मुल्क की हिफाजत करने का काम सीमाओं पर जो लोग बड़ी ऊँचाइयों पर तकलीफों में काम कर रहे हैं, सर्दी, गर्मी, बरसात में, दिन में, रात में, वे किस तरह से काम करते होंगे? क्या उसका एहसास हम नहीं कर सकते? इसलिए यदि इस देश की हिफाजत करनी है, इसको महफूज रखना है, तो हमारा भी यह फर्ज होता है कि हम इस देश के लिए कुछ काम करें। होना तो यह चाहिए कि बारी-बारी से सीमाओं पर देश के नागरिकों को भेजा जाए, जिससे उन्हें पता लगे कि सीमाओं पर सुरक्षा करने का काम किस तरह का होता है। यदि हम यह बारी-बारी से कर सकें तो निश्चित रूप से यह एक सेवा होगी। यह जरूरी नहीं कि हरेक आदमी को बंदूक के साथ तैनात कर इसे किया जाए, बल्कि उनकी मदद करने के लिए, उनकी इमदाद करने के लिए यह जरूर किया जाना चाहिए।

हमने देखा कि जब-जब भी देश के ऊपर आक्रमण हुआ है, हमारे देश के नागरिकों ने उस चुनौती का सामना करने के लिए हर प्रकार के उपाय किए हैं। मुझे याद है कि जब सन् 1965 में पाकिस्तान का आक्रमण हुआ था या जब सन् 1962 में चीन का आक्रमण हुआ था, उस वक्त एक ट्रेनिंग हुआ करती थी। उस समय हम लोग विद्यार्थी थे और हम किसी प्रोजेक्ट पर काम करने के लिए चले गए। तब हम रात-रात भर गश्त किया करते थे। हमें पता था कि हमारी रात की गश्त से कुछ होने वाला नहीं है, किन्तु वह तो आदमी को चौकन्ना करने के लिए, उसे जागरूक करने के लिए एक उपाय किया गया था। इसलिए मैं यह कहना चाहता हूँ कि इस देश की रक्षा करने के लिए जिन लोगों ने कुर्बानियाँ दी हैं, उनको हम कैसे भूल सकते हैं? सीमा पार से आकर के सुभाष चंद्र बोस जय हिन्द का नारा दे सकते हैं—

"कदम-कदम बढ़ाए जा, खुशी के गीत गाए जा,  
ये जिंदगी है कौम की, तू कौम पर लुटाए जा।  
शेर-ए-हिन्द आगे बढ़, मरने से तू कभी न डर,  
उड़ा के दुश्मनों का सर, जोश-ए-वतन बढ़ाए जा।  
कदम-कदम बढ़ाए जा, खुशी के गीत गाए जा,  
ये जिंदगी है कौम की, तू कौम पर लुटाए जा।"

और इसलिए इस मुल्क की हिफाजत करने के लिए फिर से उस जज़्बे को खड़ा करना होगा। वही आजादी की भावनाओं को लोगों के दिलों के अन्दर उतार करके फिर से देश के लिए तैयार करना होगा। जो जहां पर है वतन के काम पर है, हर कोई लाम पर है और इसलिए हर कोई सीमाओं पर है। इसलिए जिस जगह पर वह खड़ा हुआ है शिद्दत के साथ अपने कामों को करते जाएं, अपने कर्तव्यों का निर्वहन करते जाएं, निश्चित रूप से उससे राष्ट्र निर्माण में एक बहुत बड़ा योगदान रहेगा। इसलिए हमने कहा है कि हम इस राष्ट्र को उच्च स्थान पर ले जाना चाहते हैं और इस राष्ट्र की जो ऊँचाइयाँ हैं, उसको निश्चित रूप से प्राप्त करने के लिए हमें बहुत बड़ा कार्य करना होगा। इसलिए सैन्य प्रशिक्षण व्यक्ति से शुरू होता है। शरीर को साधना चाहिए। स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मन रहता है, स्वस्थ मन में स्वस्थ विचार रहता है, स्वस्थ विचार में स्वस्थ चिंतन होता है, स्वस्थ चिंतन से स्वस्थ निष्कर्ष निकलता है। राष्ट्राय-राष्ट्र के हित में, राष्ट्र हिताय, राष्ट्राय स्वाहा, राष्ट्राय इदम् न

मम । यह मेरा नहीं है यह तो राष्ट्र का है इसलिए मुझे इसको समर्पित करना चाहिए । हम करें राष्ट्र आराधन तन से, मन से, धन से, तन-मन-जीवन से और इसलिए पूरे समर्पण के साथ व्यक्ति-व्यक्ति का निर्माण करके राष्ट्र की सेवा में लगाना, क्योंकि हमने तो यह जो कुछ पाया है, आज हम संसद के अन्दर आकर के खड़े हैं, तो यह कोई हम अपनी व्यक्तिगत योग्यता के कारण से नहीं है, यह तो समाज के कंट्रीब्यूशन के कारण से है । समाज के कारण से हम यहां पर आकर के खड़े हो गए ।

"मैं एक बिन्दु, परिपूर्ण सिन्धु है यह मेरा अपना समाज ।

मेरा इसका सम्बन्ध अमर, मैं व्यक्ति और यह है समाज ।

इससे मैंने पाया तन मन, इससे मैंने पाया जीवन ।

मेरा तो बस कर्तव्य यही, कर दूं सब कुछ इसके अर्पण ।"

सब कुछ समर्पण करने का भाव लेकर के, जगाने का भाव कैसे आएगा, जब हम साथ-साथ चलेंगे ।

"संगच्छध्वं संवदध्वं सं वो मनांसि जानताम् ।"

साथ-साथ चलेंगे, साथ-साथ बात करेंगे, साथ-साथ उठेंगे, साथ-साथ बढ़ेंगे । तो निश्चित रूप से इस राष्ट्र को आगे बढ़ाने के लिए, इसकी सुरक्षा करने का जो काम हम करना चाहते हैं उस काम को अंजाम देने में हमें सहायता होगी । इसलिए यह जो बात कही गई है, यह जिस तरह से कहा गया है कि दसवीं की कक्षा से प्रशिक्षण देने का काम करना चाहिए । यह भी अनुभव किया जाता है कि दसवीं कक्षा में पढ़ने वाले बच्चों को स्नातक स्तर तक सैन्य प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए, ताकि अधिक से अधिक विद्यार्थी सेना एवं अर्द्धसैनिक बलों में भर्ती हो सकें । इसी को ध्यान में रखते हुए इस विधेयक में सभी युवाओं के लिए अनिवार्य सैन्य प्रशिक्षण का उपबंध किया गया है । इसमें जो मुश्किलें हैं उसको आसान करने के लिए नौजवानों को आगे लाना होगा ।

राष्ट्र आगे बढ़ता है, जब हम विकास की ओर बढ़ते हैं ।

"किसने ऐसा दूध पिया है जो रोके गति तूफानी ।

यह जीवन का ज्वार चली उफनाती प्रखर जवानी ।

युवा हार जाते हैं लेकिन यौवन कभी ना हारा ।

एक निमिष की बात नहीं है चिर संघर्ष हमारा ।"

वर्षों से, सदियों से जिस बात को हम कहते हुए आए हैं, भारत को फिर से उस स्थान पर ले जाने के लिए निश्चित रूप से वे प्रयास हमको करने होंगे ।

"संसार की समरस्थली में, धीरता धारण करें,

चलते हुए निज इष्ट पथ पर, सकटों से मत डरों ।"

इस निश्चय के साथ कि कोई भी चुनौती आ जाएगी राष्ट्र के सामने तो उसका सामना करने के लिए निश्चित रूप से नौजवान शक्ति देश के सामने खड़ी हो जाएगी तो मैं यह सोचता हूं कि उस सारी बात को करने के लिए किसी भी प्रकार का कोई संकट नहीं होगा । इसलिए देश में अनुशासन लाने के लिए, डिसिप्लिन लाने के लिए हमने कहा कि ज्ञान, चरित्र, एकता, और ज्ञान मिलेगा कहां से? अध्ययन से मिल जाएगा । चरित्र आएगा कहां से? व्यवहार से आएगा और एकता कहां से आएगी?

[डा. सत्यनारायण जटिया]

जब हम अनुशासन के साथ सब लोगों को साथ-साथ चलने का काम करेंगे। हमारे यहां अनेक धर्मों में, अनेक सिद्धांतों में कहा गया है और उसमें कहा है सम्यक दर्शन, सम्यक ज्ञान, सम्यक चरित्र, सम्यक रूप से दर्शन, सम्यक रूप से चीजों को देखना, सम्यक रूप से परिस्थितियों को समझना, उससे जो ज्ञान अर्जित होता है, उसके आधार पर अपना आचरण करना और यह होता है तप से और यह होता है संयम से। इसलिए तप और संयम मिला करके व्यक्तित्व का निर्माण होता है। मुझे विश्वास है कि इन सारी बातों को करने के लिए, इस देश की चुनौतियों का सामना करने के लिए नौजवानों को इस बात के लिए प्रशिक्षित करने के लिए, हम तो जब बचपन में थे, छोटे थे तभी से हमको व्यायामशाला में भेज दिया गया था। शारीरिक परिश्रम करने का काम किया। हमारे तो बहुत मित्र हो गए। "शरीर माध्यम खलु धर्म साधनम्" शरीर अच्छा है तो बाकी सब कर्तव्यों का, दायित्वों का निर्वाह हो जाता है। इसीलिए हमारे यहां चार पुरुषार्थों की बात कही गई है, धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष। धर्म का अर्थ केवल सीमित अर्थों में नहीं है, धर्म का अर्थ है कर्तव्य से, दायित्व से और धर्म का अर्थ होता है अपने पुरुषार्थ से उन सारे दायित्वों को निर्वाह करने की क्षमता अर्जित करना। फिर उससे अर्थोपार्जन करना, अर्थोपार्जन भी धर्मपूर्ण होना चाहिए और उससे सांसारिक, लौकिक और पारलौकिक भाव को पूरा करने का काम होना चाहिए। हमारे जीवन की सफलता उसी से होगी। इस विधेयक का निश्चित रूप से मैं समर्थन करना चाहता हूँ और मैं चाहूंगा कि रक्षा मंत्री जी इस पर ध्यान दें। हमने खुद एनसीसी, नेशनल कैडेट कॉरप्स में, एसोसिएटेड कैडेट कॉरप्स में वे सारे प्रशिक्षण लिए हैं। जब हम मिलिट्री ट्रेनिंग स्कूल में पढ़ते थे, सुबह पांच बजे राइजिंग बेल के साथ उठ जाते थे और निश्चित रूप से एक नए उत्साह के साथ वहां से निकलते थे। ऐसे बच्चों की बात दूसरे बच्चों से कुछ अलग ही हुआ करती थी। आज देश में सबके लिए अनुशासन की बात हो जाए, सब लोगों के एक साथ चलने की बात हो जाए और हमारे कदम एक साथ आगे बढ़ते जाएं, तो निश्चित रूप से वे हमारे एक विश्वास के कदम होंगे।

"ये कदम बढ़ें, वे कदम बढ़ें, हम कदम बढ़ाएं मंजिल तक।

यहां पौध लगे, वहां पौध लगे, बढ़ जाए छाए मंजिल तक।

चट्टानें आएँ दे धोके, दुर्भाग्य भले राहें रोके,

ताकत कदमों में चलने की, फिर क्या मौके या बेमौके।

उम्मीद उठे, उम्मीद बढ़े, उम्मीदें जाएँ मंजिल तक।

ये कदम बढ़ें, वे कदम बढ़ें, हम कदम बढ़ाएं मंजिल तक।

सब दुनिया दोस्त हमारी है, हर कली-कली फुलवारी है,

क्या बात बड़े या छोटे की, हर कोई मूरत प्यारी है।

इनको प्रणाम, उनको सज्जदा, सौ-सौ आशाएं मंजिल तक।

ये कदम बढ़ें, वे कदम बढ़ें, हम कदम बढ़ाएं मंजिल तक।"

निश्चित रूप से नौजवान-शक्ति के माध्यम से विश्वास के, अनुशासन के कदम से चलकर इस राष्ट्र का पुनरुत्थान करने का, पुनर्वैभव पर पहुंचाने का हमारा जो संकल्प है, उसको प्राप्त करने में हम सफल होंगे। इसलिए मैं अविनाश जी के इस विधेयक का पुरजोर समर्थन करता हूँ और



आपको धन्यवाद देता हूँ, आपने मुझे बोलने का अवसर दिया। बहुत-बहुत धन्यवाद। भारत माता की जय।

**श्री वीर सिंह** (उत्तर प्रदेश): उपसभाध्यक्ष महोदय, धन्यवाद, जो आपने मुझे इस विधेयक पर बोलने का अवसर दिया। श्री अविनाश राय खन्ना द्वारा जो देश के सभी युवाओं को अनिवार्य सैन्य प्रशिक्षण देने हेतु यह विधेयक लाया गया है, यह हमारे देश के युवाओं के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण है। हमारे देश के युवा ही हमारे देश का भविष्य हैं, इसलिए अपने देश की सुरक्षा के लिए, अपने देश की तरक्की के लिए युवाओं को सैन्य प्रशिक्षण दिलवाना अत्यावश्यक है।

मान्यवर, आज पूरे देश में देशभक्ति की भावना धीरे-धीरे कम होती चली जा रही है, क्योंकि पहले विद्यालयों में जैसे देशभक्ति का पाठ पढ़ाया जाता था, वह देशभक्ति का पाठ आज नहीं पढ़ाया जाता है। आज शिक्षा प्रणाली दोहरी हो गई है, गरीबों के बच्चे एक तरह की शिक्षा ग्रहण करते हैं और अमीरों के बच्चे दूसरी तरह की शिक्षा ग्रहण करते हैं। आज शिक्षा को व्यापार बना दिया गया है, धीरे-धीरे इसका प्राइवेटाइजेशन होता चला जा रहा है। सन् 1970 के पहले हमारे देश में एक भावना थी, जिससे शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए लोगों ने विद्यालयों, कॉलेजों के लिए अपनी जमीनें तक दान में दे दी थीं, किन्तु आज उसका बिल्कुल उलटा है। पहले विद्यालयों में खेलने के लिए ग्राउंड होते थे, मैदान होते थे, लेकिन आज पूरे देश में 80 परसेंट कॉलेज और विद्यालय ऐसे हैं, जहां बच्चों के खेलने का मैदान ही नहीं है। तो खेल के माध्यम से बच्चों में जो एक प्रतिभा आनी चाहिए, वह प्रतिभा आज नहीं आ रही है। यह एक सोचने का विषय है और विद्यालयों, कॉलेजों में खेलने के लिए मैदानों का होना अत्यावश्यक है। कॉलेजों में पहले एनसीसी को बढ़ावा दिया जाता था। महोदय, जब मैं नाइंथ क्लास में सिख इंटर कॉलेज, नारंगपुर में पढ़ता था, तो हमारे टीचर ने हमें प्रभावित कर के हमें एन.सी.सी. दिलाई। जब छुट्टी हो जाती थी, तो उसके बाद एक घंटा बच्चों को एन.सी.सी. सिखाई जाती थी, जिसमें उन्हें खेलना, भागना और दौड़ना सिखाया जाता था। सेना में जाने के जो तमाम गुण होते थे, वे सिखाए जाते थे। आज सभी प्रदेशों में इस पर ध्यान नहीं दिया जा रहा है। इसलिए इस ओर भी ध्यान देना बहुत जरूरी है।

मान्यवर, मैं आपके माध्यम से बताना चाहता हूँ कि आज जो हमारे नौजवान सेना में भर्ती होते हैं, वे देशभक्ति की भावना से कम, बल्कि रोजी-रोटी कमाने की भावना से ज्यादा भर्ती होते हैं। बेरोजगारी की वजह से भर्ती होते हैं। आज देश की सीमाओं पर या सेना में जितने भी हमारे नौजवान हैं, वे पूरे देश के सर्व-समाज के, गरीब परिवारों के बच्चे हैं। जब खेत में किसान और सीमा पर जवान, मुस्तैदी से डटे रहेंगे, तभी देश की तरक्की होगी। मैं बताना चाहता हूँ कि जब-जब देश पर हमला हुआ है या सीमा पर कोई खतरा पैदा हुआ, तो गरीब का बेटा लड़ता है। गरीब का बेटा ही सेना में भर्ती होकर लड़ाई लड़ता है। पूंजीपति का बेटा कभी वहां नहीं जाता। मरने के लिए गरीब का ही बेटा जाता है, किन्तु हमारे देश की सरकार उन गरीबों की तरफ ध्यान नहीं देती है।

महोदय, हमारे बीच में रक्षा मंत्री जी उपस्थित हैं। मैं उनसे निवेदन करूंगा कि आदिवासी लोग हमारे देश में बहुत बड़ी मात्रा में हैं। उन्हें सैन्य शिक्षा तो छोड़ो, किसी भी प्रकार की शिक्षा नहीं मिल रही है। उनके अंदर बहुत अच्छी प्रतिभा है। वे वनों और पहाड़ों में रहते हैं। यदि उन्हें खेल के मैदान में थोड़ा सा प्रोत्साहन मिल जाए, तो वे सबसे ज्यादा मैडल जीतकर ला सकते हैं और देश का गौरव

[श्री वीर सिंह]

बढ़ा सकते हैं। अभी तक हम उनकी तरफ कोई ध्यान नहीं दे रहे हैं। हमें उनकी तरफ भी ध्यान देना चाहिए। पूरे देश में सभी विद्यालयों में देश भक्ति का पाठ पढ़ाया जाना चाहिए। यदि हमें अपने देश की तरक्की करनी है और देश को आगे बढ़ाना है, तो यह बहुत ही आवश्यक है।

महोदय, श्री अविनाश राय खन्ना जी ने इस विधेयक को प्रस्तुत किया है। यह बहुत महत्वपूर्ण विधेयक है। मैं अपने सुझावों के साथ इसका समर्थन करता हूँ। धन्यवाद।

SHRI V. P. SINGH BADNORE (Rajasthan): Sir, I thank you for having given me this opportunity to speak on this very important Private Member Bill moved by Shri Avinash Rai Khanna. What I wanted to say was that there are a few reasons why I want to support this very important legislation in the garb of a Private Member Bill that has been moved. First and foremost, I must say that if you look at all the countries in this world, 50 per cent of the countries have conscription. Even the USA till recently had draft and it was only in the 70s that they did away with draft, and draft and conscription is compulsory military training in most of the countries even today. Russia has compulsory military training in the garb of conscription. Israel has it. China has it and so many countries have it. The USA had it, but there was some reason, and then, they converted it into Peace Corps. They had a different system instead of the draft. In India, I think, we must have it for very many reasons which have been very aptly put forth by my colleagues here. One of the most important things that our Prime Minister has been talking about is discipline, which is lacking in our country, and skill development. You can mix both of them. They can go in tandem. I would not go into the details of where to start, how to start and for how many years. That is for the Minister, the Cabinet, the Army, the Navy and the Air Force to think about. But it is very important. What does it really do? If you have a selective conscription after college, it will sort out your problem of unemployment to an extent. I am saying 'to an extent'. You have vocational courses. For the first year, you can have the military training. Then, you can ask those same people to get into vocational or whatever skill development which is the pet subject of our Prime Minister today and you can have it. Then, they can go wherever they want to. They can have training in engineering, electricity or whatever. It can turn out from the military training which is conscription. Now, I am talking about the selective conscription after college. It should be that all the bureaucrats must do it before they get into service. Everybody must have it for two years and if that is done, it will be very good. People say that you have MNREGA. You spend so much money on it. You can divert some of that money to conscription. I am not saying that you do away with MNREGA. I am saying that you can divert ₹40,000 crore. The money that is spent on NCC can also be diverted to conscription and to start with, you have selective conscription. How you want to do it is a different subject. I don't want to go

**4.00 P.M.**

into the details of it. But, after college and before you get into any service, you can have two years and from there, you can get into bureaucracy and discipline will come into it. Corruption is such a big issue today that military training would in some way give those people a direction as to what they can do for the country.

(MR. DEPUTY CHAIRMAN *in the Chair*.)

Then, there are other issues of naxalism and terrorism. Let me tell you that in the olden days, there was a person in a village in Rajasthan, who used to have one weapon and the dacoits never used to come thinking that he was a trained person and he knew how to shoot well. They thought of not going to and touching that village. Today, the Naxal problem is there. Is it just the Police and the Paramilitary that can really take care of that? It is not possible. You need people who can defend themselves. And how can that be done? It can be done only through selective conscription, and I am using a different word for what Mr. Avinash Rai Khanna has said. But that is how we should go about it. And then, in the last year before they leave, in the three year period of conscription, it should be vocational. Wherever they want to go, they get a training there and that should also be imparted there. Today, Mr. Minister, you are aware, wherever there is recruitment, thousands and thousands of our youth gather there. They love to be in the military, paramilitary, Police. If this was done, we could take some people out from there; and whoever is good, and who wants to remain there, can remain there. That would also, in one way or the other, give a big message to our neighbours, that we have a force which nobody else has. China has such a big force. And whatever technology may be there today, maybe aeroplanes and tanks, the importance of foot soldier is always going to be there. Let me also remind the House here that the First and the Second World Wars were won by our Indian soldiers. And if the Indian soldiers were not fighting in the First and the Second World Wars, I think the Allied Forces would not have won. There were three-four Victoria Crosses given. I remember, there was a Victoria Cross given to one soldier, and he died recently; he was a 90 year old man. He fought in famous battles in France. Usually, the Victoria Cross is given posthumously. He won the Victoria Cross because there was a message that had to be passed six miles away, between the enemy and the forces. He was a *Medhtiya*! He was from my family. He, on a horseback, had covered six kilometers... (*Time-bell rings*)

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Okay. It has already taken two hours. Please sit down.

SHRI V. P. SINGH BADNORE: Sir, everybody got all the time in the world, except me. Why? Because I am the last speaker?

MR. DEPUTY CHAIRMAN: No, no. When your name was called earlier, you were not here. I had called your name earlier. Two hours limit is already over. I think it is more than two hours.

SHRI V. P. SINGH BADNORE: Let me also say what was very rightly said by one of my colleagues, that it is the playing-fields of the public school which have won a lot of battles. Admiral Nelson, when he won against Napoleon in the Battle of Waterloo, had said this, "This battle is not won on the battlefield here, but on the playing fields of Eton".

Sir, I again commend the Private Member's Bill moved by Avinash Rai Khannaji and I support this Bill. We must do it. Thank you very much.

THE MINISTER OF DEFENCE (SHRI MANOHAR PARRIKAR): Mr. Deputy Chairman, Sir, I thank all those who have expressed their support for this Bill; Shri Mansukh L. Mandaviya, Shri Bhupinder Singh, Prof. Ram Gopal Yadav, Chaudhary Munvvar Saleem, Dr. Satyanarayan Jatiya, Shri Veer Singh and Shri V.P. Singh Badnore, and those who spoke on the 8th of August when I was not here. I consider myself lucky. Actually, I should have opened the account with the Question Hour in the House, but I was not given the opportunity, thanks to the battlefield here. There was a battlefield virtually. I am opening my account in Rajya Sabha with such an excellent concept, which I would have been supportive of, had I been sitting somewhere there. But I have been made to sit here with some thinking from the Government side. There are issues...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Even then you can support it.

SHRI MANOHAR PARRIKAR: I will support it, but I will point out the issues which can create problems. I think some issues have not been considered. The idea is good. It is an excellent idea; there is no doubt about it. I was quite happy that it was across party lines. It proves that nationalism does not have a colour. It is only the colour of motherland that makes you talk about it. While being very positive on the overall concept, I have certain issues which I will place before the House and then express my views on this matter. One is the number. The Bill talks about a minimum of one year compulsory military training. Now, if you just go by a rough mathematical calculation, it talks about the age of 14 to 50. I do not know if a youth in the age of 50 would like to go for it. In politics we may call someone young even if he is of 65 years, but in physical military training, I don't think 50 is a very conducive age. We allow an Army jawan to retire at the age of 35 and 40. Physically, it may not, first of all, be possible to give military training to those who are above 24 or 30 years of age. The second aspect is, even if you consider it from the age 17 or 18 to 25, that would itself make about 14 to 15 crore eligible youths. We have 125 crore people, divided by 60, if it is

the age criterion, you will get two crores per year and for eight years, there will be 16 crores of youths who will be eligible. If 50 per cent of them are fit for Army training, you have eight crore youths to be trained. The number is huge. The number is too big. I am talking on the Bill. The Bill provides for a minimum one year training. In fact, one solution which I can see, was suggested by Prof. Ram Gopal Yadav, to which I will come later. I will just talk about the Bill first. The quantum of expenditure required for this, I was just calculating it, will be nothing less than ₹60,000 crores per year. More so, let us assume that we manage ₹60,000 crores from somewhere, by taking small, small quantity from different heads. How do you train them? How many trainers would you require? I will have to put the full Army to train them.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Why do you think of the compulsory military training, which is given to the Army? Don't think about that. Our youth can be given some training in schools and colleges. For that, this much of expenditure will not be required.

SHRI MANOHAR PARRIKAR: I am talking on the Bill first. It is not only that. It will require expenditure and infrastructure, if I have to fulfil the requirement under the Bill. If it is passed, we would have no choice afterwards. We will have to go by what is said in the Bill. Though I do agree, to an extent, that some people may be considering it as रोज़ी रोटी, as mentioned by one of the hon. Members, I disagree with the basic concept that no one goes to get himself killed in the front केवल for रोज़ी रोटी। There has to be some sort of a pride in it. I have, in fact, taken cognizance of the confusion at *melas* in Gwalior and Rajasthan. I have issued instructions that they should do it in a district, or, they should do it by increasing the number of days in Madhya Pradesh, Bihar and other areas. For instance, Rajasthan and Uttar Pradesh are areas where young generation wants to get into the Army. So, we will work out proper *melas*. That is one aspect on the sight. In a way, the concept is good and, so, while appreciating the concept, I feel, we should think about certain hours of training in our schools. Of course, the NCC has a sanctioned strength of 13.80 lakhs for a very long time. Three or four years back, the Government decided to increase it by 2 lakhs making it 15.80 lakhs. I think it is inadequate. When we look at the kind of NCC today and the one that was there when we were young, when we were a part of the NCC, I think, that was, completely, different. It was too diluted. Now the number of students has increased beyond control. And, so, what I consider, as a much reasonable one, as you said, Sir, is to introduce a compulsory training for a certain number of hours for completing the graduation. It can be introduced as a class, जैसा कि आपने सजेस्ट किया है कि एक घंटे का हफ्ते में या दो घंटे का हफ्ते में। Or, it can be introduced as a completely separate course to be taken by a student during his college tenure. He can take it in the first year or in the second year. In IITs, we had a compulsory NCC course, and I completed it almost

[Shri Manohar Parrikar]

after the graduation. I gave the last exam and then realized that I had not completed the NCC minimum required course. So, in the summer month of May, we had a condensed course and we completed it in eight weeks. But it was compulsory to get a qualification certificate in IITs. We can work out something like that. And with the help of the Members who have shown deep interest in the subject, I would have a discussion as to how to go about the issue. If we can work out something, if we can start it on a trial basis, let us do it in some districts where there is more enthusiasm, districts which face the border, and that can include partial military training, like, fifty or sixty hours during the course of graduation, and can be done over a period of time. It need not be on a weekly basis. One can take it as a course; like the way we take History, Maths, etc., we can take one course of defence training. But I feel, along with this, what we need is nation-building, character building. And that does not come only through military training. It is only one of the sources. There are organizations, but I will not go into those things. But I feel that our teaching has also slipped. Education has slipped. Value education is nowhere to be seen. So, we need to take all these aspects into consideration before we come to a type of conclusion.

With these remarks, I wish to say that I have noted the sentiments of the hon. Members and, I think, in view of the explanations that I have given, the Bill may kindly be withdrawn and I assure that after consulting Members, we will come out with an appropriate mechanism on the issue. It may take a few months, but I will, definitely, take an initiative. That is why, I said, I consider myself lucky. As it was mentioned, I also got admission for the NDA and then the Army Corps of Engineers. Because of some reason I could not join. So, probably, there is something genetic which attracts me to Defence forces. Maybe, that got me here. Thank you very much.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Is Shri Avinash Rai Khanna here to reply? He is not here. Therefore, he is not here to withdraw also. So I am putting the Bill to vote for the House.

The question is:

“That the Bill to provide for compulsory military training to all youths in the country and to include military training in the curriculum for children from matriculation to graduation level and for matters connected therewith, be taken into consideration”.

*The motion was negatived.*

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Nobody is saying no, only one yes and one no. Anyhow, it is negatived. But I am happy the hon. Minister has accepted the spirit of the Bill and I can add and tell you that military training is an important instrument in

character building. So without spending much money, in each college you can have two to three months' training. At least that much will be good.

SHRI MANOHAR PARRIKAR: We will keep in mind and fix a meeting and take your advice.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Now, we will take up the Fertilizer (Price Control), Bill, 2013. Shri Vivek Gupta, you can speak on the Bill.

**The Fertilizer (Price Control) Bill, 2013**

SHRI VIVEK GUPTA (West Bengal): Sir, I beg to move:

That the Bill to provide for the fixing of maximum retail price of all fertilizers by the Central Government and for matters connected therewith and incidental thereto, be taken into consideration.

Sir, I would like to begin by narrating a small, true story that happened in the rural part of Bengal with a rural farmer. Sir, one night a distressed farmer came and told his wife that he had decided to commit suicide and his wife was shocked. But she soon recollected her wits and asked him, 'Why do you want to commit suicide?' He said, 'I don't have money to buy fertilizers, I don't have money to buy pesticides, I don't have money. I don't know how we will do farming and what I will do.' His wife said, 'Why don't you do farming without it and see for one year and see what happens?' Anyway, if it happens, it happens.

[THE VICE-CHAIRMAN (DR. SATYARANAYAN JATIYA) *in the Chair*.]

So he did farming that year without using fertilizers and he managed to survive that year, but the next year again the same story was repeated. Sir, from herein I want to start by saying that fertilizer is as important as the seed in the Green Revolution and in our country's growth and progress for self-sufficiency in foodgrains storage. Before I speak, fertilizer is a subject which is passionate for all of us. It is close to all our hearts. Why is it so? Let me give you a little background. Sir, 26 crore people are classified as agricultural workers who work in the farms and in the fields. They are spread across 72 homogenic agro-climatic zones. Sir, 86 per cent are having marginal and small holding size which makes farming unremunerative at times and 72 per cent of these farmers cultivate in dry to medium rainfall regions. Some statistics needs to be known and I would like, through you, to have the attention of the hon. Minister who has just handled charge and he can, probably, do something. Sir, we have an installed capacity of 364 lakh metric tons of urea but we only produce 150 lakh metric tons. The consumption is, however, 255 lakh metric tons. Sir, the source of all this information